Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ऋग्वेद →

ऋग्वेद की अध्ययन परम्परा ऋषि पैल से आरम्भ हुई है। छन्दोबद्ध मन्त्रों से इस वेद की ग्रन्थावृति आविर्भूत हुई है। चारों संहिताओं में ऋग्वेद का स्थान सर्वाधिक

Scanned with CamScanner

महत्त्वपूर्ण है। इसका नाम सर्वप्रथम आता है। भाषा और भाव की दृष्टि से ऋग्वेद को अन्य वेदों से प्राचीन माना जाता है। ऋग्वेद के मन्त्रों के द्वारा यज्ञाङ्गों को दृढ़ करने की घटना से उसका प्राथमिक होना प्रमाणित होता है-

"यद्वै यज्ञस्य साम्ना यजुषा क्रियते, शिथिलं तद्, यद् ऋचा तद् दृढमिति"

(तैत्तिरीय संहिता - 6/5/10/3)

अर्थात्

यज्ञाङ्ग जो साम और यजुष से सम्पन्न होता है, वह शिथिल हो सकता है, किन्तु जो ऋक् के द्वारा सम्पादित होता है, वह दृढ़ होता है।

छन्दोबद्ध मन्त्रों को ऋक् कहते हैं। जैमिनि न्यायसूत्र में कहा भी गया है- 'पादेनार्थेन चोपेता वृत्तबद्धा मन्त्राः'। स्तुतिपरक मंत्रों को भी ऋक् नाम से अभिहित किया जाता है- ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्। पुरुष सूक्त के अनुसार ऋग्वेद की उत्पत्ति विराट् पुरुष से बतलाई गई है।

ऋग्वेद विभाग - ऋग्वेद के दो प्रकार के विभाग उपलब्ध होते हैं -

(1) मण्डलक्रम (2) अष्टक क्रम।

प्रथम क्रम के अनुसार ऋग्वेद के समस्त मंत्र 10 मण्डलों में विभक्त हैं। इसमें 85 अनुवाक, 1028 सूक्त तथा 10,580¼ मंत्र हैं। दूसरे क्रम के अनुसार पूरे ऋग्वेद को आठ समान भागों में बाँटा गया है। प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय हैं। इस प्रकार इस विभाजन के अनुसार पूरे ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। यह पुनः 2006 वर्गों में विभक्त है। ध्यातव्य है कि प्रत्येक अध्याय के अवान्तर विभागों का नाम वर्ग है। वर्ग ऋचाओं के समुदाय की संज्ञा है, परन्तु वर्गों में ऋचाओं की संख्या निश्चित सी नहीं है। तुलनात्मक दृष्टि से मण्डलक्रम का प्रचलन अधिक है। विद्वानों ने

Scanned with CamScanner

इसे महत्वशाली, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक माना है। 10 मण्डलों के विभाग के कारण ही ऋग्वेद को 'दशतयी' की संज्ञा प्रदान की गई है।

ऋग्वेद की शाखाएं → महाभाष्य के आधार पर ऋग्वेद की 21 शाखाएं होने का उल्लेख है। सम्प्रति विशेषतया शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन और माण्डूकायन नामक पाँच ही शाखाएं प्रसिद्धि में रही हैं। यद्यपि शाकल के अतिरिक्त अन्य चारों शाखाओं की संहिता पूर्ण रूप में नहीं मिलती है, तथापि अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है। किसी का ब्राह्मण, किसी का आरण्यक तथा श्रौतसूत्र मिलने से पाँच शाखाएं ज्ञात होने की पुष्टि होती है। इन पाँच शाखाओं में शाकल तथा बाष्कल शाखाएं ही विशेष प्रचलित हैं। जिसमें मण्डल सूक्त आदि से विभाग किया गया हो, वह शाकल और जिसमें अष्टक-अध्याय-वर्ग क्रम से विभाजन किया गया हो उसको बाष्कल कहते हैं।

विषय वस्तु → यह विशेष गौरवपूर्ण तथ्य है कि मात्र भारत में ही नहीं अपितु विश्व के लिए ऋग्वेद ज्ञान, विज्ञान और ऐतिहासिक तथ्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों के लिए धरोहर है। इसमें अनेक सूक्तों के माध्यम से रोचक एवं महत्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन किया गया है। वस्तुतः भारतवर्ष की यह विशेषता है कि यहाँ ज्ञान-विज्ञान, राज्य और शास्त्र विद्या, साहित्यकला, सभ्यता-संस्कृति आदि का मूल वेद माना जाता है या इन सबका सम्बन्ध वेदों से जोड़ा जाता है जिनमें ऋग्वेद प्रथमस्थानीय है।

भगवदीय तत्वों का भक्तिपरक विवेचन

ऋग्वेद में प्राप्त होता है-

अदो यद्वारु प्लवते सिन्धोः पारे अपूरुषम्।
तदा रभस्व दुर्हणो तेन गच्छ परस्तरम्॥
(ऋग्वेद 10/155/3)

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

अर्थात् जो अपौरुषेय पुरुषोत्तम नामवाले दारुमय देवता सिन्धुतीर में जल के ऊपर भासमान हैं- हे स्तोता! तुम उन्हीं दारु का अवलम्बन करो। उन्हीं समुपास्य दारुमय देवता की सहायता एवं करुणा से तुम परम उत्कृष्ट वैष्णव लोक को प्राप्त हो।

इस परमतत्त्व के विषय में ऋग्वेद में कहा गया है -

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस
यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु
तद् यदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्॥
(10/81/4)

अर्थात वह कौन सा वन है? वह कौन वृक्ष है? जिससे आकाश और पृथिवी निर्मित है। मनीषी लोग जिज्ञासा करें तथा अपने मन में ही प्रश्न करें कि वह अधिष्ठान क्या है जो भुवनों को धारण कर रहा है।

ऋग्वेदवाक्य राष्ट्रप्रेम, देशसेवा और उत्सर्ग के प्रेरक हैं। यही कारण है कि ~~इसका~~ यह आर्यों का सर्वप्रधान एवं सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ है। ऋग्वेद में जगदीश्वर से प्रार्थना की गई है -

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥
(10/191/2)

अर्थात हे जगदीश्वर! आप हमें ऐसी बुद्धि दें कि हम सब परस्पर हिलमिलकर एक साथ चलें; एक-समान मीठी वाणी बोलें और एक-समान हृदय वाला होकर स्वराष्ट्र में उत्पन्न धन-धान्य और सम्पत्ति को परस्पर समानरूप से बाँटकर भोगें। हमारी हर प्रवृत्ति राग-द्वेष-रहित परस्पर प्रीति बढ़ानेवाली हो।

ऋग्वेद के इन्द्रसूक्त में जगदीश्वर से स्वराष्ट्र के लिए धन-धान्ययुक्त पुत्रों से समृद्ध होने की

Scanned with CamScanner

कामना की गई है -

"स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम्।
चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥

तात्पर्य यह कि हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन्। आप हमें धन-धान्य से सम्पन्न ऐसी संतान प्रदान कीजिए, जो उत्तम एवं अमोघ शस्त्रधारी हो, अपनी और अपने राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ हो तथा न्याय, दया - दाक्षिण्य और सदाचार के साथ जन-समूह का नेतृत्व करने वाली हो, साथ ही नाना प्रकार के धनों को धारणकर परोपकार में रत एवं प्रशंसनीय हो तथा लोकप्रिय एवं अद्भुत गुणों से सम्पन्न होकर जन-समाज पर कल्याणकारी गुणों की वर्षा करने वाली हो।

देवता तत्त्व का विवेचन भी ऋग्वेद का विवेच्य है। ऋषियों ने देवताओं के महाभाग्य का प्रत्यक्ष अनुभव किया है। सिद्धान्तकौमुदी में 'साऽस्य देवता' सूत्र की वृत्ति में देवता शब्द के दो लक्षण दिये गये हैं- (i) त्यज्यमानद्रव्ये उद्देश्यविशेषो देवता तथा (ii) मन्त्रस्तुत्या च। प्रथम लक्षण का अर्थ है - जिसके उद्देश्य से आज्य आदि हविर्द्रव्य का त्याग किया जाय उसे देवता कहते हैं। यह लक्षण कल्पश्रौतसूत्र के अनुसार है। द्वितीय लक्षण निरुक्त के अनुसार है जिसका अर्थ है - मन्त्र से जिसकी स्तुति की जाए वह देवता है। प्रथम लक्षण का प्रयोग केवल यज्ञों में होता है। देवता स्वरूप के परिचायक द्वितीय लक्षण का ही सर्वत्र उपयोग होता है। ऋग्वेद में देवता के स्वरूप को प्रतिपादित करता हुआ एक मन्त्र है →

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

"प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्"

अर्थात् हे जगत्स्वामी परमात्मन्! यह सब आपसे ही उत्पन्न हुआ है। आपसे भिन्न इनका कोई पालक या अधिष्ठाता नहीं है। अतः जिस फल की कामनावाले हम आपको उद्दिष्ट करके हवन करते हैं या आपका स्तवन करते हैं, आपकी कृपा से हमें वह अभीष्ट फल प्राप्त हो। इस मन्त्र से सूचित होता है जिसके उद्देश्य से हवन-स्तवन आदि किये जाएं और जो प्रसन्न होकर आराधक की अभीष्ट-सिद्धि का कारण बने, वही देवता है।

ऋग्वेद में अग्नि, सोम, पृथ्वी आदि पृथ्वी स्थानीय देवता एवं इन्द्र, रुद्र, वायु आदि अन्तरिक्ष स्थानीय देवता तथा वरुण, मित्र, उषस्- सूर्य आदि द्यु-स्थानीय देवताओं में परिगणित हैं। ऋग्वेद के सूक्तों में इन्द्र सर्वाधिक चर्चित देवता हैं। अग्नि और सोम क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान पर आते हैं।

इतने सारे देवताओं और उनके कार्यों को देखते हुए मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हो सकती है कि ये समस्त देवता एक साथ रहते हुए अपने कार्य का निष्पादन कैसे करते हैं? इसका उत्तर यह है कि वैदिक देवता परस्पर केवल अविरोध-भाव से ही नहीं, अपितु उन्नायक भाव से भी चराचर जगत के जो शाश्वत नियम हैं, उनके अनुसार सत्य और ऋत का पालन करते हुए अपने कर्तव्यों का विधिपूर्वक निर्वहन करते हैं और हमें प्रेरणा देते हैं कि सम्पूर्ण मानव-जाति शाश्वत नियमों का विधिवत पालन करते हुए समग्र द्वन्द्व और द्वेष को मिटाकर एक-साथ मिलजुलकर सत्कर्म करते हुए पवित्रतापूर्ण जीवन-यापन करें — "देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते"। (ऋग्वेद 10/191/2)

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

इन देवताओं की समग्र प्रवृत्तियाँ जगत् के कल्याणार्थ हैं। वे अज्ञान और अन्धकार से दूर प्रकाशरूप हैं, सतत कर्मशील हैं। अतः मानवमात्र का कल्याण देवताओं के साथ सायुज्य स्थापित करने में ही है। वास्तव में वैदिक देवतावाद से प्राकृतिक शक्तियों के साथ मनुष्य-जीवन की समीपता तथा एकरूपता की आवश्यकता का भी हमें परिज्ञान होता है।

ऋग्वेद में कहा गया है कि 'सत् तो एक ही है, किन्तु उसका वर्णन विद्वद्वर्ग अग्नि, यम, वायु आदि अनेक नामों से करता है। यह एक 'सत्' परमात्मा है, जो इन्द्र, वरुण, रुद्र आदि अनेक देवताओं में समाया हुआ है –

"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥"
(1/164/46)

ऋग्वेद पुनर्जन्म की भारतीय धारणा का भी पोषक है। अनेक मन्त्रों के माध्यम से इस सिद्धान्त की पुष्टि की गई है –

"असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्।
ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति॥
पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्तिः॥"
(10/59/6-7)

इनमें परमात्मा की 'असुनीति' संज्ञा से स्पष्ट किया गया है कि वह प्राणरूप जीव को भोग के लिए एक देह से दूसरे देहतक ले जाता है। उस असुनीति परमात्मा से प्रार्थना है कि वह अगले जन्मों में भी सुख दे और ऐसी कृपा करे कि सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि हमारे लिए कल्याणकारी सिद्ध हों।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

आचार्य कपिलदेव द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास में बताया है कि ऋग्वेद कई अन्य दृष्टियों से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, दार्शनिक एवं काव्यशास्त्रीय दृष्टि से अत्यन्त सारगर्भित है। धार्मिक दृष्टि से इसमें यज्ञों का महत्त्व, देवाराधना, ईश्वर के अनेक रूप, प्राचीन धार्मिक मान्यताएं, पाप-पुण्य की चर्चा, स्वर्ग-नरक और मोक्ष विषयक मन्तव्य, पुनर्जन्म, लोक-परलोक, आस्तिक-नास्तिक, धर्म-अधर्म आदि विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। सांस्कृतिक दृष्टि से प्राचीन काल का जीवन-दर्शन, सदाचार, शिष्टाचार, सत्य-असत्य का अन्तर, हिंसा-अहिंसा का भेद, पाप-पुण्य विवेक, हेय-उपादेय का विवेचन इसमें प्राप्य है। सामाजिक दृष्टि से वर्णव्यवस्था, उनके कर्त्तव्यादि, समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध, विवाहादि विधियाँ, नगर-पुर-ग्रामादि, खान-पान, परिधान, अलंकरण आदि की प्रचुर सामग्री इसमें उपलब्ध है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसमें पुरातत्त्व, युग, कल्प, प्रलय, ऋषिवंश, देव-असुर, इन्द्र-वृत्र आदि से सम्बद्ध बहुमूल्य सामग्री है। राजनीतिक दृष्टि से इसमें राजा के अधिकार और कर्त्तव्य, राज्य-शासन, संघ-शासन, राजतंत्र और प्रजातंत्र, राष्ट्र की कल्पना, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य, राजा का निर्वाचन, राज्याभिषेक, प्रजा के अधिकार और कर्त्तव्य आदि विषयों का समावेश है। आर्थिक दृष्टि से इसमें कृषि, अन्न, कृषि के उपकरण, आजीविका के साधन, व्यापार-वाणिज्य, रत्न, सुवर्ण आदि, पशुपालन आदि का वर्णन प्राप्त होता है। दार्शनिक दृष्टि से पुरुषसूक्त और नासदीय सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन, ब्रह्म, ईश्वर, जीव, माया, एकेश्वरवाद, बहुदेवतावाद, पुनर्जन्म, मोक्ष आदि का इनमें महत्त्वपूर्ण वर्णन है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

काव्यशास्त्रीय दृष्टि से ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन काव्य ग्रन्थ है। काव्यशास्त्र, नाटक और आख्यान साहित्य के उद्गम और विकास का इतिहास इससे प्राप्त होता है। इस प्रकार ऋग्वेद प्राचीन युग का विश्वकोश है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner